© March 2026 | IJIRT | Volume 12 Issue 10 | ISSN: 2349-6002

जॉन ड्यूवी के शिक्षा दर्शन की भारतीय परिवेश में प्रासंगिकता

अर्चना भूकेश
(असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग), बीकॉन इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी, परतापुर बाईपास, मेरठ

***सारांश*—आज हम जो कुछ हैं, वह शिक्षा का परिणाम है। शैक्षिक विकास का तात्पर्य संपूर्ण विकास से है। शिक्षा ही ज्ञान का वह विशाल वृक्ष है, जिससे विभिन्न विषयों के विकास की शाखाएँ निकलती हैं। शिक्षा के इस विशाल वृक्ष को अनेक शिक्षाशास्त्री मिलकर अपने-अपने ज्ञान से सींचते हैं। शिक्षा को उच्च स्तर पर पहुँचाने के लिए विश्व स्तर पर अनेक शिक्षाशास्त्रियों ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। प्रसिद्ध विदेशी शिक्षाशास्त्रियों में जर्मनी के फ्रेडरिक फ्राबेल, यूनान के प्लेटो और अरस्तू, इटली की मारिया मोंटेसरी तथा अमेरिका के जॉन ड्यूवी प्रमुख हैं। भारत के प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्रियों में स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, श्री अरविंद घोष, रवींद्रनाथ टैगोर, डॉ. बी. आर. अंबेडकर तथा सावित्रीबाई फुले प्रमुख हैं। इन सभी शिक्षाशास्त्रियों में अमेरिका के जॉन ड्यूवी का शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण स्थान है। ड्यूवी के विचारों को प्रगतिवादी शिक्षा के नाम से भी जाना जाता है। ड्यूवी ने किताबी ज्ञान की अपेक्षा "करके सीखने" को अधिक महत्व दिया। उनका सीखने की प्रक्रिया पर विशेष बल था।**

I. प्रस्तावना

जॉन ड्यूवी अमेरिका के रहने वाले एक प्रसिद्ध दार्शनिक और शिक्षाशास्त्री थे। शिक्षा के क्षेत्र में ड्यूवी के विचारों को बहुत महत्व दिया जाता है और आज भी उनका अनुसरण किया जाता है। उनका महत्वपूर्ण सिद्धांत "करके सीखने का सिद्धांत" था। वे कहते थे कि वास्तविक जीवन के अनुभव और समस्याओं का समाधान, हमें शिक्षित करते हैं। ड्यूवी के अनुभव और व्यवहारिक कार्यों पर आधारित शिक्षा को प्रगतिशील शिक्षा कहा जाता है। शिक्षा एक गतिशील सामाजिक प्रक्रिया होने के कारण बालक स्वयं कार्य करके सीखते हैं। ड्यूवी का मानना था कि बालकों की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे वे लोकतांत्रिक समाज में सक्रिय रूप से भाग ले सकें। शिक्षक बालकों का मार्गदर्शक होता है, इसलिए उसे बच्चों के कार्यों में सहायक के रूप में सहयोग करना चाहिए।

जॉन ड्यूवी ने 1894 में एक प्रायोगिक प्राथमिक विद्यालय की स्थापना की। इस विद्यालय में बालक दुनिया की वास्तविक समस्याओं को समझते और उनका समाधान करते थे। बच्चों का व्यवहार उनके अनुभवों और प्रयोगों के आधार पर बदलता था। ड्यूवी का कहना था कि विद्यालय एक सामाजिक संस्था है और शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। अतः बालक विद्यालय में सामाजिक कार्यों में भाग लेकर समाज का एक अच्छा सदस्य बनता है। विद्यालय में ड्यूवी द्वारा बताई गई शिक्षण विधियों के प्रयोग के आधार पर सामाजिक समस्याओं का समाधान करना आसान हो जाता है। उनकी प्रमुख शिक्षण विधियाँ परियोजना विधि, खेल विधि, स्रोत विधि तथा समस्या-समाधान विधि थीं। ड्यूवी के शिक्षण सिद्धांत आज भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रासंगिक हैं।

II. समस्या का कथन

शोधार्थिनी ने अपनी शोध का शीर्षक "जॉन ड्यूवी के शिक्षा दर्शन की भारतीय परिवेश में प्रासंगिकता" रखा है।

शोध के उद्देश्य

1. ड्यूवी के अनुसार शिक्षा के अर्थ का अध्ययन करना।
2. ड्यूवी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों की भारतीय परिवेश में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
3. ड्यूवी के अनुसार शिक्षण की विधियों का अध्ययन करना।
4. ड्यूवी के अनुसार पाठ्यक्रम का अध्ययन करना।
5. ड्यूवी के अनुसार अनुशासन का अध्ययन करना।
6. ड्यूवी के अनुसार शिक्षक एवं छात्र का अध्ययन करना।
7. ड्यूवी के अनुसार विद्यालय का अध्ययन करना।

शोध विधि

इस शोध पत्र में ऐतिहासिक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध प्रक्रिया

शोध कार्य को पूर्ण करने हेतु शोधार्थिनी द्वारा निम्न साधनों एवं स्रोतों का प्रयोग किया गया है।

प्राथमिक स्रोत:- प्राथमिक स्रोतों में जॉन ड्यूवी द्वारा रचित साहित्य को सम्मिलित किया गया है।
द्वितीय स्रोत:- द्वितीय स्रोतों में पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय जर्नलों, समाचार पत्रों तथा वर्कशॉप, गोष्ठियों और सम्मेलनों में प्रस्तुत विचारों को सम्मिलित किया गया है।

शोध का महत्व
इस शोध पत्र के माध्यम से शोधार्थिनी का उद्देश्य छात्रों, शिक्षकों एवं शोधकर्ताओं को ड्यूवी के शैक्षिक विचारों से अवगत कराना है, ताकि वे अपने शैक्षिक कार्यों में ड्यूवी के विचारों को सम्मिलित करके शिक्षा से जुड़े लोगों को लाभान्वित कर सकें। ड्यूवी के शैक्षिक विचार आज भी प्रासंगिक हैं। उनका अनुसरण करके शिक्षा के क्षेत्र में उच्च स्तर पर विकास किया जा सकता है।

III. जॉन ड्यूवी का जीवन परिचय

जॉन ड्यूवी अमेरिका के एक प्रसिद्ध दार्शनिक, शिक्षाशास्त्री, मनोवैज्ञानिक तथा समाज सुधारक थे। विशेष रूप से शिक्षा के क्षेत्र में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ड्यूवी का जन्म 20 अक्टूबर 1859 को हुआ तथा उनकी मृत्यु 1 जून 1952 को हुई।
विश्वविद्यालयी शिक्षा प्राप्त करने के बाद ड्यूवी ने प्राथमिक विद्यालय एवं हाई स्कूल में शिक्षण कार्य किया। पीएच.डी. करने के बाद उन्होंने मिशिगन विश्वविद्यालय में अध्यापन किया। इसके बाद शिकागो विश्वविद्यालय में उन्होंने दर्शनशास्त्र विभाग का नेतृत्व किया और वहाँ एक प्रायोगिक प्राथमिक विद्यालय की स्थापना की। अपने जीवनकाल में उन्होंने अनेक लेख और पुस्तकें लिखीं, जिनका शिक्षा के क्षेत्र में आज भी विशेष महत्व है।

ड्यूवी के अनुसार शिक्षा का अर्थ
ड्यूवी के अनुसार शिक्षा एक सामाजिक एवं व्यवहारिक प्रक्रिया है, जिसमें वातावरण को नियंत्रित करके बालक अपनी क्षमताओं का विकास करता है। बालक सैद्धांतिक और पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा लोकतांत्रिक आधार पर स्वयं करके सीखता है।

ड्यूवी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य
1. समग्र विकास
ड्यूवी कहते हैं कि बालक के भविष्य को ध्यान में रखते हुए उसका सर्वांगीण विकास किया जाना चाहिए। वे रटने का विरोध करते हैं और सक्रिय तथा क्रियात्मक सीखने पर बल देते हैं।

2. करके सीखना
ड्यूवी का मानना है कि बच्चों को सीखने के लिए सिद्धांतों की अपेक्षा स्वयं करके सीखने पर बल दिया जाना चाहिए। बालक की क्रियाएँ उद्देश्यपूर्ण होती हैं, अतः उसका निर्माण उसके अनुभवों के आधार पर होना चाहिए।

3. लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा
ड्यूवी के अनुसार बालक की शिक्षा लोकतांत्रिक मूल्यों स्वतंत्रता, समानता और सहयोग के आधार पर होनी चाहिए, ताकि बालक सामाजिक एवं व्यवहारिक बन सके।

4. वातावरण के साथ समायोजन
बालक की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो उसे सामाजिक वातावरण के अनुकूल बना सके।

ड्यूवी के अनुसार शिक्षण विधियाँ
1. क्रिया द्वारा सीखना
इस विधि द्वारा बालक स्वयं करके सीखता है। शिक्षक एक सहायक की भूमिका निभाता है। बालक अपने अनुभवों के आधार पर अपनी समस्याओं का समाधान करता है।

2. चर्चा द्वारा सीखना
इसमें छात्र और शिक्षक किसी समस्या को लेकर आपस में चर्चा करते हैं और उसके समाधान तक पहुँचते हैं।

3. व्याख्यान विधि
इस विधि में शिक्षक किसी विषय से संबंधित विस्तृत जानकारी देता है और छात्र ध्यानपूर्वक उसे सुनते हैं।

4. अन्य विधियाँ
इसके अतिरिक्त शिक्षक प्रश्नोत्तर विधि और योजना (परियोजना) विधि के माध्यम से भी शिक्षण कराता है।

ड्यूवी के अनुसार पाठ्यक्रम
ड्यूवी के अनुसार पाठ्यक्रम सर्वांगीण विकास पर आधारित होना चाहिए। इसमें ऐसी सामग्री होनी चाहिए जो बालकों के वास्तविक जीवन से संबंधित हो, ताकि वे व्यवहारिक और सामाजिक बन सकें।

पाठ्यक्रम निम्न सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए

1. उपयोगिता का सिद्धांत

पाठ्यक्रम व्यवहारिक ज्ञान पर आधारित होना चाहिए, ताकि बालक जीवन में आने वाली समस्याओं का समाधान कर सके।

2. रुचि का सिद्धांत

पाठ्यक्रम बालकों की रुचियों पर आधारित होना चाहिए। इसमें विभिन्न विषय सम्मिलित होने चाहिए, ताकि बालक अपनी रुचि के अनुसार विषयों का चयन कर सके।

3. एकीकरण का सिद्धांत

पाठ्यक्रम ज्ञान के एकीकरण पर आधारित होना चाहिए तथा यह बाल-केंद्रित और लचीला होना चाहिए।

4. क्रियाशीलता का सिद्धांत

ड्यूवी के अनुसार विद्यालय समुदाय का लघु रूप है, इसलिए विद्यालय में शिक्षण क्रियात्मक होना चाहिए, ताकि बालक स्वयं कार्य करके सीख सके।

IV. ड्यूवी के अनुसार अनुशासन

ड्यूवी बालकों को बाहरी दंड देने का विरोध करते हैं। उनका मानना है कि बालक को डराकर शिक्षा नहीं दी जानी चाहिए। अनुशासन ऐसा होना चाहिए जो बालक के भीतर से स्वयं उत्पन्न हो। ऐसा अनुशासन सामाजिक और स्थायी होता है।

ड्यूवी के अनुसार शिक्षक एवं छात्र का संबंध

ड्यूवी के अनुसार शिक्षक एक मार्गदर्शक होता है, जो उपयोगी शिक्षण विधियों के माध्यम से बालकों का सर्वांगीण विकास करता है। छात्र एक सक्रिय शिक्षार्थी होता है, जो शिक्षक के सहयोग से अपनी रुचि और अनुभव के आधार पर सीखता है। शिक्षक विद्यार्थियों को लोकतांत्रिक नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता है।

ड्यूवी के अनुसार विद्यालय

ड्यूवी कठोर अनुशासन वाले विद्यालयों का विरोध करते हैं। उनके अनुसार विद्यालय सामाजिक अनुभवों की प्रयोगशाला होना चाहिए, जहाँ बालक परस्पर संपर्क द्वारा जीवन की श्रेष्ठ प्रणालियाँ सीख सके। विद्यालय स्वतंत्र और सामाजिक वातावरण वाला होना चाहिए।

V. जॉन ड्यूवी के शिक्षा दर्शन की भारतीय परिदृश्य में प्रासंगिकता

जॉन ड्यूवी के शिक्षा दर्शन का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि उनके शैक्षिक विचार भारतीय शिक्षा में अत्यंत प्रासंगिक हैं। भारतीय शिक्षा भी बालक के सर्वांगीण विकास पर बल देती है और ड्यूवी भी बालक के सर्वांगीण विकास को महत्व देते हैं।

भारतीय शिक्षा करके सीखने पर बल देती है और ड्यूवी भी इसी सिद्धांत का समर्थन करते हैं। दोनों का मानना है कि अपनी रुचि के आधार पर स्वयं करके सीखा हुआ ज्ञान स्थायी और व्यवहारिक होता है तथा इससे बालक एक लोकतांत्रिक नागरिक बनता है।

पाठ्यक्रम के संदर्भ में भी भारतीय शिक्षा बालकों की रुचियों को महत्व देती है और ड्यूवी भी पाठ्यक्रम को बालकों की रुचि के अनुसार बनाने की बात करते हैं।

शिक्षक के संबंध में भी दोनों का मत है कि शिक्षक को कठोरता के स्थान पर प्रेम और सहयोग से विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करना चाहिए।

विद्यालय के संदर्भ में ड्यूवी विद्यालय को समाज का लघु रूप मानते हैं, जहाँ बालक स्वतंत्र वातावरण में क्रियात्मक और व्यवहारिक शिक्षा प्राप्त करता है। भारतीय शिक्षा में भी विद्यालय के वातावरण को बालकों की आवश्यकताओं के अनुसार बनाने का प्रयास किया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] र. ब. लाल, शैक्षिक चिंतन और प्रयोग. मेरठ, भारत: आर. लाल बुक डिपो.

[2] ओ. पी. सिंह, शिक्षा दर्शन एवं शिक्षाशास्त्री. इलाहाबाद, भारत: शारदा पुस्तक भवन.

[3] एन. आर. स्वरूप सक्सेना और के. पी. पांडे, शिक्षा दर्शन तथा महान शिक्षाशास्त्री. मेरठ, भारत: आर. लाल बुक डिपो.

[4] डॉ. गिरीश पचौरी, शिक्षा के दार्शनिक और मूल आधार. मेरठ, भारत: आर. लाल बुक डिपो.

[5] डॉ. ए. बी. भटनागर और डॉ. अनुराग भटनागर, [शीर्षक उपलब्ध नहीं]. मेरठ, भारत: आर. लाल बुक डिपो.

[6] डॉ. सतवीर सिंह, शिक्षा का दर्शनशास्त्र और समाजशास्त्र. मेरठ, भारत: आर. लाल बुक डिपो.

[7] के. के. शर्मा, एजुकेशनल थिंकर्स. नई दिल्ली, भारत: ए.पी.एच. पब्लिशिंग, 2012।

[8] एस. एन. मुखर्जी, इंडिया में एजुकेशन: आज और कल. बड़ौदा, भारत: आचार्य बुक डिपो, 2010।

[9] एल. सी. सिंह, एजुकेशनल फिलोसोफी. नई दिल्ली, भारत: अटलांटिक पब्लिशर्स, 2005।